Vol. 6 Issue. 11 (Series 3) MARCH 2019 Impact Factor- 5.7 (UIF)

RESEARCH DIRECTIONS

UGC APPROVED

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Open Access Research Journal

ISSN No. 2321-5488 UGC Journal No. 45489

Indexed in
Scientific Index Services
& Citefactor

CiteFactor
Academic Scientific Journals

Arts Science & Commerce College
Naldurg

Editor-in-Chief : Dr. S. P. Rajguru

website : www.researchdirections.org

Scanned by CamScanner

UGC Sr. No. 45489 RESEARCH DIRECTIONS ISSN NO – 2321-5488
Impact Factor – 5.7 Vol: 6 Issue: 11, Series 3 March 2019

Arts Science & Commerce College Naldurg

Contents

Sr. No.	Author Name	Title	Page No.
29	Balasandhya.S.L.[1] Dr. A.Enoch[2]	A Qualitative Study On The Personal Factors Affecting The Employee Retention Of Engineering Graduates In South India	200
30	सत्यवान	हिन्दी साहित्य में किसान विमर्ष	206
31	Yash Nimbalkar[1] Hrithvik[2] Patel Hemank Joshi[3]	Financial Inclusion And Banking	212
32	Dr. Asha Sharma	A Review On: Impact Of Octapace Culture On Employee Performance	218
33	Shajimon.I.J,	Measurements In Vāstu	224
34	Mr. Gittu Baby	A Study On Job Satisfaction Of Nurses In Selected Private Hospitals In Meenachil Taluk	228
35	संतोष बाबुराव कुन्ठे	भारतातील सुशासन	235
36	Malkar Vinod Ramchandra	Marketing Problems Faced By Small Scale Agro-Based Industries: A Study Of Ahmednagar District, Maharashtra, India	241
37	Renjitha Rajeev	Linking Corporate Social Responsibility With Customer Happiness And Retention In Print Media	248
38	डा. हाशमबेग मिर्झा[1] जावेद खलिल पटेल[2]	मध्ययुगीन दक्खिनी हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति के दर्शन	254
39	Dr. Hardik Mehta	A Study The Programme Of Awareness "Nasho Notere Nahs" Through Bhavai Vesh In Relation Particular Variables	262

Scanned by CamScanner

UGC JOURNAL. NO. 45489
IMPACT FACTOR – 5.7

ISSN NO – 2321-5488
VOL: 6 ISSUE: 11 MARCH 2019
EOI 10.11229/researchdirections/Mar19/38

Arts Science & Commerce College Naldurg

मध्ययुगीन दक्खिनी हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति के दर्शन

शोध निर्देशक: डा. हाशमबेग मिर्झा **शोध छात्र: जावेद खलिल पटेल**

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नलदुर्ग, ता. तुलजापुर,जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

सारांश:

दक्खिनी साहित्य पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव आरंभ से ही दिखाई देता है। दक्खन प्रदेश बहामनी शासक और पाँच मुस्लीम राजवंशों की धार्मिक सहिष्णुता के कारण प्रभावित रहा है। हिन्दू और मुस्लीम इन दोनों के बीच में सांस्कृतिक आदान प्रदान हो रहा था। दक्खिनी कवि ईस्लाम के अनुयायी होते हुए हिन्दू धर्म और उनके रीति-रिवाजों से प्रभावित हुए। अपने साहित्य में हिन्दूओं के तीज, त्यौहार, पर्व, उत्सव, हिन्दू देवी, देवताओं का चित्रण किया है। दक्खिनी के प्रथम काव्य कदमराव पदमराव की कथा भारतीय है। डॉ.वी.पी. कुंजमेत्तर इस संबंध में लिखते हैं-**"मसनवी कदमराव पदमराव कथा का आधार भारतीय पौराणिक आख्यान है। पतिव्रत्य और परकाया प्रवेश की जो कथाएँ इसमें वर्णित है वह राजा विक्रमादित्य की कथा से ग्रहित जान पडती है।"1** दक्खिनी कवियों के काव्य में भारतीय संस्कृति का प्रभाव उनकी मसनवियों के रचना प्रक्रियासे ही दिखाई देता है। इनकी कथाएँ भले ही पर्शियन है पर इनकी आत्माएँ भारतीय है।

दक्खिनी हिन्दी भाषा की ही एक बोली है। यह बोली भारत के दक्खन में बोली जाती है। दक्खिनी दक्खन के लोगों के आचार विचार की भाषा है। मुहमद तुघलक ने इ.स. 1327 में दिल्ली को छोडकर औरंगाबाद राजधनी बनाने का निर्णय लिया। उसके इस निर्णय के कारण दिल्ली से सैनिक, व्यापारी, विद्वान और कलाकार औरंगाबाद में आकर बस गये। इनकी भाषा प्रमुख रुप से हरियानवी, पंजाबी और खडीबोली थी जो दिल्ली के आसपास बोली जाती थी। इन भाषाओं का संबंध स्थानीय भाषा और बोलियों के साथ आ गया। इन के संयोग से जो एक नयी भाषा का जन्म हुआ उसे दक्खिनी भाषा कहा जाता है। दक्खिनी भाषा बहामनी शासन का विघटन होने के बाद पाँच राज्यों (निजामशाही, आदिलशाही, कुतुबशाही, बरीदशाही, इमादशाही) की प्रमुख भाषा बनी। दक्खिनी इस क्षेत्र के जनमानस का सहारा लेकर खूब पली और विकसित हुई। उसमें उच्च कोटी का साहित्य लिखा गया। मध्ययुगीन काल में वह दक्खन में साहित्य, कला, विचार एवं संस्कृति की एक प्रमुख भाषा थी ।

मूल शब्द: मध्ययुग, दक्खिनी हिन्दी, भारतीय संस्कृति, मुस्लीम कवि

प्रस्तावना:

दक्खिनी हिन्दी साहित्य का भारत के दक्खन प्रदेश में चैदाहवी सदी से लेकर अठरावी सदी तक प्रभाव रहा है। पहली बार तेरहवी सदी में अल्लाउद्दीन खिल्जी ने दक्षिण भारत पर आक्रमण

Available at www.researchdirections.org

Scanned by CamScanner

किया। उस समय उनके सैनिकों के साथ सूफ़ी संत, व्यापारी, कलाकार आदि दक्खन में आये। उनकी भाषा दिल्ली और उसके आस पास बोली जानेवाली भाषा थी। 1327 ई.स. में मुहम्मद तुघलक ने अपनी राजधनी दिल्ली से बदलकर दौलताबाद (औरंगाबाद) बनाई। यह राजनीतिक दृष्टि से एक बहुत बडा फैसला था। भाषिक दृष्टि से इस परिवर्तन का परिणाम स्पष्ट रुप में देखा जा सकता है। दिल्ली से दौलताबाद के लिए उस समय सैनिक, व्यापारी, कलाकार, विद्वान, सूफी संत आदि बडी तादाद में दक्खन में आकर बस गये उस समय दक्खिनी ही उनकी संपर्क भाषा थी। उस समय वह बोली से भाषा का रुप ग्रहण कर रही थी। इस के कुछ ही दिनों के बाद बहामनी राजवंश की स्थापना 1347 ई.स. में अल्लाउद्दीन हसन बहामन शाह ने फिरोजशाह तुघलक से विद्रोह कर अपने राज्य की स्थापना की। बहमनशाह तुर्क था वह वह उत्तर के राजाओं को अपना शत्रु मानता था। स्वयं को दक्खिन का निवासी कहने में वह गर्व महसुस करता था। उसका लगाव स्थानिक भाषाओं की ओर अधिक था। जिसके कारण दक्खिनी के विकास के लिए अनुकूल माहौल निर्माण हुआ। दक्खिनी का आरंभिक रुप सूफी फकीरों के धार्मिक उपदेश तक ही सीमित था। दक्खिनी के आरंभिक कवियों में ख्वाजा बंदा नवाज गेसूदराज, शाह मीरांजी शम्सुल उश्श्याक, बुरहानुद्दीन जानम, कुरेशी और लुत्फी आदि प्रमुख रहे हैं। इन कवियों को अल्लाउद्दीन बहमन शाह ने धार्मिक ग्रंथ लिखने की प्रेरणा दी।

संस्कृति से तात्पर्य:

मनुष्य समाजशील प्राणी है वह जिस देष में वास करता है वहाँ की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, कलात्मक और अध्यात्मिक स्थिति का प्रभाव उस पर पडता है। मूलतः संस्कृति बहुआयामी होती है। एक देश में अनेक धर्म, जातियाँ, संप्रदाय होते हैं और इन सबकी अलग-अलग संस्कृति होती है। विभिन्न धर्म का खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, पूजा-पाठ, वेश-भूषा आदि भिन्न है। मनुष्य, समाज और संस्कृति यह एक प्रकार का त्रिकोण है। मनुष्य समाज का एक घटक है और समाज की ही संस्कृति होती है। अर्थात संस्कृति के अभाव में मनुष्य का कोई असतित्व नही है। मनुष्य जिस समुदाय में जन्म लेता है, उस पर उसी समुदाय के संस्कारों का प्रभाव पडता है। वह उसी के सहारे अपना सारा जीवन व्यतीत करता है।मनुष्य के जीवन में संस्कृति एक 'मार्गदर्शिका' के रुप में कार्य करती है। अतः कहा जा सकता है कि संस्कृति मानव जीवन का दर्पण होती है। इसके अभाव में मनुष्य और प्राणियों में कोई अंतर नही है। मनुष्य अपने संस्कृति के अनुरुप जीवन निर्वाह कर अपने उद्देश्य तक पहुँच सकता हैं। डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र का मत है, **"संस्कृति मानव जीवन के विचार-आचार का संशुद्धीकरण अथवा परिमार्जन है। वह मानव जीवन की सजी संवरी हुई अन्त स्थिति है। वह मानव समाज की परिमार्जित रुचि और प्रवृत्ति पुंज का नाम है। 2"** हिन्दी के प्रगतिशील आलोचक डा. देवराज संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहते हैं, **"संस्कृति मानवीय व्यक्तितत्व की वह विषेषता है जो इस व्यक्तिगत को एक विषेष अर्थ में महत्वपूर्ण बनाता है। वस्तुतः संस्कृति उन गुणों का समुदाय है**

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

जिन्हे मनुष्य अनेक प्रकार की षिक्षाद्वारा अपने प्रयत्न से प्राप्त करता है। 3" अंततः इतना कहा जा सकता है कि संस्कृति का न ओर है न छोर है उसकी कोई सीमा नही है, वह असीम है। विद्वानों ने उसे अपनी ओर से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

संस्कृति जीवन को दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। भूत का अध्यायन कर वर्तमान में कार्य करती है और भविष्य को संग्रहीत करती है। मध्ययुगीन भारत में जो दक्खिनी काव्य लिखा गया उसके लगभग सभी कवि मुस्लीम थे, और राज्य शासक भी मुस्लीम किंतु महत्व पुर्ण बात यह थी की यहां की अवाम हिंदू-मुस्लीम दोनों थे। इन कवियों के काव्य में भारतीय संस्कृति के दर्शन हमें होते हैं। जिसे निम्नांकित बिंदुओं व्दारा स्पष्ट किया जा सकता है।

परम पुरुषों के प्रति आदरभाव:

अपनों से बडों का, गुरुजन तथा माता-पिता का आदर करना यह भारतीय संस्कृति की परंपरा है। गुरुजनों और ऋषी-मुनियों के प्रति प्राचीन काल से राजा महाराजाओं और सामान्य जनता के मन में आदरभाव रहा है। अधिकांश दक्खिनी कवि दरवेश, फकीर थे या सूफीयों से आस्था रखते थे। दक्खिनी काव्य में संन्यासियों के प्रति आदर प्रकट किया है। निसंतान राजा को किसी संन्यासियों के आशीर्वाद से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। संन्यासी या सूफी दरवेश मानवता के लिए अपना जीवन निछावर करते हैं। समाज की सेवा करना या अपने ज्ञान द्वारा लोगों का कल्यान करना इनके जीवन का उद्देश्य है। वे भौतिक सुखों का त्याग कर समाज सेवा का व्रत लेते हैं। जैन संन्यासियों के वेश-भूषा का वर्णन दक्खिनी कवियों ने इस प्रकार किया है-

"न था तन पे कपडा, वह उरयान था,
न कुछ खाना पानी उपर ध्यान था।' ' 4

कवि ने यहाँ पर जैन धर्म के दिगंबर संप्रदाय के संन्यासियों का चित्रण किया है। दिगंबर जैन पंथ के संन्यासी वस्त्रविहीन रहते हैं। नाथ पंथी योगीयों का वर्णन करते हुए इब्ने निशाती 'फूलबन ' में लिखते हैं-

"लगा कानाँ कूँ मुद्रे होर चकर ले ,
सींगी यह हत में खप्पर ले ।' ' 5

इस प्रकार दक्खिनी कवियों ने संन्यासियों, विरक्तों और सूफीयों के प्रति आदर भाव प्रकट करते हुए भारतीय संस्कृति के अनुरुप ही चित्रण किया है।

ज्योतिष्य तथा भाग्यवाद पर श्रद्धा:

ज्योतिष्य तथा भाग्यवाद का भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। किसी भी शुभ कार्य को संपन्न करने से पूर्व ज्योतिष्य का सहारा लिया जाता है। ईस्लाम धर्म का ज्योतिष्य पर

Scanned by CamScanner

विश्वास नही हैं फिर भी दक्खिनी कवियों ने भारतीय संस्कृति के प्रभाव स्वरुप इसे स्वीकार किया है और अपने विचार व्यक्त किये हैं। तत्कालीन राजा महाराजाओं का ज्योतिष्य पर विश्वास था। वे पुत्र प्राप्ति के विषय में जानने के लिए, पुत्र का भविष्य जानने के लिए, विवाह या फिर कोई भी शुभ कार्य को करने से पहले ज्योतिषियों की शरण में जाया करते थे। भाग्यवादी विचारधारा का चित्रण लगभग सभी दक्खिनी कवियों में देखने को मिलता हैं। इसी के अनुरुप हिन्दू तथा ईस्लाम धर्म की मान्यता है कि बच्चे का भाग्य सात दिन के भीतर ही लिखा जाता है। दक्खिनी कवि रिजवानशहा के प्रेमाख्यान 'रुह अफजा' में नायीका रुह अफजा प्रेम में फँसने पर भाग्य का फैसला समझकर चूप रहती है-

" बदा था तो गुजर्या ,अता क्या करना।' ' 6

संतान का महत्व:

भारतीय संस्कृति में जीवन की सार्थकता के लिए चतुर्वर्ग फल प्राप्ति की बात कही गई है। जिसके अंतर्गत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का समावेश होता है। पुत्र अभाव में मोक्ष की प्राप्ति नही होती ऐसी मान्यता है। इसलिए संतान प्राप्ति को भारतीय संस्कृति में महत्व पूर्ण स्थान है। दक्खिनी कवियों में भी यह भाव स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है।

दक्खिनी कवियों के अधिकांश प्रेमाख्यानक कथानक का आरंभ संतानाभाव के दुःख से ही होता है। तत्कालीन मान्यता के अनुसार संतान की प्राप्ति माता-पिता के लिए आवश्यक सी थी। 'गुलशने इश्क' पे्रमाख्यानक काव्य में राजा के घर से संन्यासी यह कह कर चला जाता है कि मैं संतानहीन व्यक्ति के घर का पानी पिता नहीं-

"यो शह के बचन गजब सूं खिताब,
दिया यूं मिठे लब सूं कडवा जवाब ।
कि चल बेग उचा मुज चरन ते सीर ,
रवाने ल्यूँ बाँज के घर ते नीर ।' ' 7

दक्खिनी प्रसिध्द कवि मुल्ला वजही के काव्य में भी यही भाव परिलक्षीत होता है। उन्होंने 'कुतुब मुश्तरी' (1617 ई.स.) इस पे्रमाख्यानक काव्य में निसंतान राजा का वर्णन इसप्रकार से किया है-

"सौ बहुत के उम्मीद हौर आसते,
संग्या एक फर्जंद खुदा के पास तो बैत ।
कि फर्जंदते नां अचात अहैं,
अपी गय तो बी नांव अचता अहैं।
यही बात फिर फिर के कहता अछे ,
उसीध्यान में नित वो रहता अछे ।' ' 8

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

तत्कालीन समाज में यह मान्यता थी कि पुत्र कुल दीपक होता है, वह पिता का नाम और कुल आगे चलाता है। यह भावना भारतीय संस्कृति से ही दक्खिनी कवि के विचारों में आई है। ईस्लाम में ऐसी कोई मान्यता नही है। इसलिए समाज में यह मान्यता थी कि जिसे पुत्र प्राप्ति होती है वही भाग्यवान है।

जन्मोपरांत समारोह का आयोजन:

हिन्दू परंपराओं, रीति-रिवाजों का प्रभाव मुसलमानों की जीवन पद्धति पर भी पढा है। संतान जन्म के छः दिन बाद छट्ठी की रस्म होने लगी। मुंडन प्रथा की तरह मुसलमानों ने 'आखीखे' का रिवाज आम हो गया जिसका धार्मिक आदेश पहले ही उनके पास था। हिन्दू संस्कृति के प्रभाव स्वरुप मुसलमान भी बच्चे की जन्मपत्री तैयार करने लगे। ज्योतिष्य नुसार जन्म कुंडली बनाने लगे। ज्योतिषियों के सलाह से शुभ समय तय कर मुसलमानो के बच्चों की शिक्षा का आरंभ किया जाने लगा। इस अवसर पर प्रितिभोज दिया जाता था। इस विधि को 'बिस्मील्लाह' कहा जाता था। मौलवी साहब कुछ कुराण की आयते पढते बच्चा उसे दुहराता। बच्चे को सब को सलाम करने के लिए कहा जाता है। यह विधि बच्चे की उम्र के चार वर्ष, चार महिने, चार दिन अवसर पर किया जाता। बच्चे की सालगिराह मनाने का रिवाज हिन्दू और मुसलमान दोनो में भी था। इस अवसर पर वे समारोह का आयोजन करते और प्रितिभोज होता। बालक को बाल्यकाल से ही शस्त्र-अस्त्र चलाने की शिक्षा दी जाती थी, जिससे आवश्यकता पढने पर वह स्वयं की रक्षा कर सके। राजकुमारों को यह शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती थ्ी।

शिक्षा दिक्षा: भारतीय संस्कृति में बच्चों की शिक्षा को अधिक महत्व दिया गया है प्राचीन काल में शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति के लिए बचपन में ही माता-पिता बच्चों को अपने से दूर गुरुकुल या आश्रम में भेज दिया करते थे। वहाँ पर गुरु उन्हे विधिवत शिष्यत्व प्रदान करते थे। वे उन्हे शस्त्र, शास्त्र, वेद-पुराण, राजनीति, कला, साहित्य आदि की शिक्षा देते थे जिससे वह एक सर्वगुण संपन्न युवक बन जाता था। शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिष्य को अपने परिवार से दूर आश्रम में रहना पडता था। दक्खिनी कवियों के काव्य में शिक्षा के लिए इसी परंपरा का निर्वाह किया गया है। दक्खिनी कवियों ने पाँच वर्ष की आयु में बच्चे की शिक्षा आरंभ करने की बात की है। नुसरति ने 'गुलशने इश्क' में बच्चे की शिक्षा की आयु चार वर्ष, चार मास, चार दिन मानी है। इस आयु में नायक मनहर की शिक्षा का प्रारंभ कराया है-

"बरस चार पर चार दिन चार मास ,
सू होने में ल्या है मुअल्लिम के पास ।' ' 9

Available @ www.researchdirections.org

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

पैर पडना चरण स्पर्शः-

भारतीय संस्कृति में अपनों से बडों के प्रति आदर, कृतज्ञता ,सम्मान प्रगट करने के लिए नतमस्तक होना या चरण स्पर्ष करने की बात कही गयी है। जैसेः-माता-पिता, गुरु और ईष्श्र के सामने शिश झुकाना। ईस्लाम धर्म में उसका कोई भी अनुयाई खुदा के सिवा किसी के सामने सजदा नही कर सकता। किन्तु वह बडों तथा गुरूजनों के प्रति आदर प्रकट करने के लिए और माता-पिता के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए चरण स्पर्श, शिश झुकाना, मना नहीं है। इसलिए जहाँ कही उनके साहित्य में पैर पडना, शिश झुकाना आदि जैसे षब्द आए है तो इसका अर्थ सजदा नही हो सकता। भारतीय संस्कृति के प्रभाव-स्वरूप उन्होने इस शब्द का प्रयोग किया है। मुल्ला वजही ने 'कुतुब मुश्तरी' प्रेमाख्यानक में' पाँव पडने कि क्रिया को सम्मान प्रदर्षन की सामाजिक क्रिया के रुप में ग्रहण किया है। 'कुतुब मुश्तरी' पे्रमाख्यानक में अतारद मार्ग के एक महल में ठहरकर मुश्तरी की खोज में बंगाल जाता है। यात्रा पर जानें से पहले वह षाह के पाँव पर सिर रखकर आशिर्वाद लेता है।

"रख्या शाह के पाँव पर सर उने ,
सराया पतंग हो के फिर-फिर उने
भोत नेह सूँ षह उस गले लाये
जे कुच मुस्तैदी मंग्या सो दिए ।' ' 10

दानशिलताः

दक्खिनी कवियांे के काव्य में दानशिलता की प्रवृत्ति स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। परोपकार, परसेवा, पर दुःख निवारण के लिए दान दिया जाता है। पुत्र जन्म, विवाह संस्कार के अवसर पर दान देने की प्रथा का वर्णन दक्खिनी कवियों ने किया है। मुल्ला वजही ने 'कुतुब मुश्तरी' मे ऐसे अनेक प्रसंग दर्शाये हैं जिसमें दान देने का वर्णन किया गया है। सुलतान ईब्राहीम कुतुबशाह पुत्र रत्न प्राप्ति से अत्याधिक प्रसन्न होकर धन-लुटाने लगे। उन्होने देवदूतों को इतना अधिक दान दिया की उस दान में प्राप्त स्वर्ण से देव दूत एक नया स्वर्णाकाश निर्मित कर सकते थे-

"यता कुछ दिये शह फरिश्ताँ कूँदान
के बाँदे सुने काँ नवा आसमान ।
अंबर दान पाया हे जर बेशुमार ,
तो ढूँढना हे रुखने कूँ दिन -रात ठार ।' ' 11

मादक एवं उत्तेजक पदार्थो का सेवनः

ईस्लाम धर्म में मादक पदार्थ का सेवन करना पाप है। वह बडा गुनाह माना जाता है। यह कृत्य धर्म विरोधी है। अधिकांश दक्खिनी कवि ईस्लाम धर्म के अनुयाई है। फिर भी उन्होने भारतीय

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

परंपरा के प्रभाव स्वरुप मदिरापान या मादक द्रव्यों के सेवन का चित्रण किया है। बादशाहों के दरबार के महफिल में मादक पदार्थों का सेवन किया जाता था। मुहम्मद कुली कुतुबशहा अपनी युवावस्था में शिक्षा-दिक्षा प्राप्त कर लेते हैं इस खुशी में वे एक रात उल्लास पूर्ण समारोह का आयोजन करते है। इस समारोह मे वे अपने मित्रों के साथ मदिरापान करते हैं-

"शहंशा मंजलिस किये एक रात ,
बजीरां के फरजन्द ते सब संगात ।
** ** ** ** **
शराब हार सुराई नुकुल होर जाम ,
होय मस्त मजलिस के लोगं तमाम।' ' 12

त्यौहारों का वर्णन:

पर्व और त्यौहारों का चित्रण लगभग सभी दक्खिनी कवियों ने किया है, इसमें प्रमुख रुप से कुली कुतुबशहा, वली औरंगावादी, वजही, नुसरती आदि कवियों का नाम प्रमुख है। कुली कुतुबशहा ने हिन्दू नववर्ष का वर्णन 'नौरोज' में इसप्रकार किया है-

"पिया मुख नूर ते है जावदी हम ईद व हम नौरोज ।
सूरज आवो हमट न अधाँ हमं् ईदो हम् नौराज ।।
** ** ** ** **
मुबारक बाद देने आइया नौरोज तुज दरबार ।
आदिक सुखते करें तारे कुराँ हम नौरोज ।।' ' 13

हिन्दू देवी देवताओं का वर्णन:

दक्खन के सभी शासक ईस्लाम धर्म के अनुयाई होते हुए भी उन्होंने बहुसंख्य हिन्दू प्रजा के देवी देवताओं के प्रति आदर भाव प्रकट किया है उनकी स्तुति की है। जो उनकी धार्मिक उदारता को स्पष्ट करती है। ईब्राहिम आदिलशहा द्वितीय 'जगतगुरु' ने किताबे नौरस में हिन्दू देवी देवताओं का वर्णन करते हुए भगवान शिव के विषय में लिखते हैं-

" दुरमुकाम भैरव नौरस
भैरव करपूत गौरा भाल तिलक चन्दरा
तिरी नेत्र जटा कुकुट गंगा धरा
एक हस्त रुंड नरा त्रिशुल जुगल करा
ब्हन बालि वरुद (वर्ध) सीत जात गुसाई ईश्वरा,
कास कुरुत कुँजर पृष्ठ चर्म वयाग्रा ।' ' 14

अन्त में,

Available @ www.researchdirect.org

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

दक्खिनी साहित्य भारतीय संस्कृति की गोद में पला-बढ़ा साहित्य है। जनता के बीच प्रवाहित संस्कृति का सुक्ष्म चित्रण दक्खिनी साहित्य के कवियों ने किया है। अपने उदार स्वभाव के कारण इन कवियों ने हिन्दू मुस्लीम दोनों जातियों को एकत्र लाकर सांस्कृतिक समन्वय का जो अद्भूत प्रयास किया वह सराहनिय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. मसनवी कदमराव पदमराव - निजामी बीदरी , संपादक - डा. वी. पी. कुंजमेत्तर, पृष्ठ 21
2. हिन्दी ललित निबंधों का सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अध्ययन - डा. श्रीरंग वट्टमवार, पृष्ठ 99
3. हिन्दी ललित निबंधों का सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अध्ययन - डा. श्रीरंग वट्टमवार, पृष्ठ 99
4. रिजवानशहा -रुह अफजा, पृष्ठ 92
5. फूलबन - ईब्ने निशाती, पृष्ठ 62
6. रिजवानशहा- रुह अफजा, पृष्ठ 46
7. गुलशने इश्क - नुसरति, पृष्ठ 48
8. कुतुब मुश्तरी - मुल्ला वजही, संपादक विमल वाघ्रे, पृष्ठ -119
9. गुलशने इश्क -नुसरति, पृष्ठ 62
10. कुतुब मुश्तरी - मुल्ला वजही, संपादक विमल वाघ्रे पृष्ठ -121-122
11. कुतुब मुश्तरी - मुल्ला वजही, संपादक विमल वाघ्रे, पृष्ठ -41
12. कुतुब मुश्तरी - मुल्ला वजही, संपादक विमल वाघ्रे, पृष्ठ -45-46
13. दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन- संपादक- परमानंद पांचाल, पृष्ठ क्रमांक-225
14. दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन- संपादक- परमानंद पांचाल, पृष्ठ क्रमांक-317

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602

Scanned by CamScanner